INDEPENDENCE DAY

आज हम यदि खुली हवा में साँस ले रहे हैं तो उन असंख्य शहीदों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की बदौलत, जिन्होंने आजादी का बीज रोपा और उसे अपने लहू से सींचा। वही बीज आजादी के 72 सालों में विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। आजादी के इन वर्षों में हिन्दुस्तान ने कमोबेश विज्ञान, तकनीक, कृषि, साहित्य, खेल आदि सभी क्षेत्रों में तरक्की की है। अब स्वतंत्रता के 72 साल बाद, भारत सरकार का राष्ट्र के एकजुट और उज्जवल भविष्य के लिए ये साहसिक कदम -धारा 370 को खत्म करना !! इसके इतर हमने बहुत कुछ खोया भी है, जैसे- समन्वयवादी दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य, धार्मिक सहिष्णुता, परस्पर प्रेम और भाईचारे का भाव आदि-आदि। हाल ही में कश्मीर के संदर्भ में नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि जिन युवाओं के हाथों में किताबें और लैपटॉप होने चाहिए, मन में सपने होने चाहिए, उनके हाथों में पत्थर होते है!

बबिता चौहान

तमाम विरोधाभास के बावजूद हमारा अखंड भारत है। यह बात सही है कि कुछ लोगों ने अखंडता को तार-तार करने का प्रयास किया पर बार-बार मुँह की खानी पड़ी है। वर्तमान नेतृत्व में आज देश विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है। हमने खोने से ज्यादा पाया है। 370 हटने के बाद कश्मीर पर आधिपत्य वास्तव में अब हुआ है।

नीतू चौधरी

हमारे लिए स्वतंत्रता एक शब्द भर नहीं है इसके पीछे असंख्य भारतियों के बलिदान की गौरव गाथा छिपी हुई है। हमारे देश ने बहुत बड़ा समय परतंत्रता में बिताया। पूरे विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहाँ युवा वर्ग की जनसंख्या सबसे ज्यादा है इसलिए इन पक्तियों के माध्यम से कहना चाहती हूँ कि जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है, तो आइये भारत के नवनिर्माण में हर भारतवासी देश के उज्वल भविष्य के लिए बड़ी नहीं तो छोटी ही सही,जिम्मेवारी का निर्वहन करें,एक जिम्मेदार नागरिक बने।

गरिमा यादव

आर्थिक,तकनीकी,समाजिक तरक्क़ी,विविध एंव समृद्ध संस्कृति,एक आत्मनिर्भर सक्षम और स्वाभिमानी देश की छवि, स्थायी व मज़बूत लोकतंत्र। विश्वगुरु बनने की तरफ़ बढ़ते क़दम-ऐसे आज़ाद भारत पर गर्व है मुझे और सदा बना रहेगा। किन्तु आज हमारा देश जातिवाद,धार्मिक उन्माद,सम्प्रदायिकता,भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं से ग्रस्त है, हमें इन पर मंथन कर एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा। एक नया भारत बनाना होगा। जय हिंद जय भारत !

सोनाली खंडेलवाल, डायरेक्टर ब्रेनबी किड्स एकेडमी

आज भारत को आज़ाद हुए 8 दशक हो चुके हैं। भारत की इस स्वतंत्रता के लिए सैकड़ों शहीदों व स्वतंत्रता सैनानियों को मेरा शत-शत नमन। इस दौरान भारत ने न केवल बैलगाड़ी से राकेट तक का सफ़र तय किया है, बल्कि नए-नए आविष्कारों और तकनीकी विकास से विश्व में अपनी पहचान बनाई है। हमारा देश आज चॉंद तक पर पहुँच चुका है। मोदी सरकार ने धारा 370 व 35 ए को विलोपित करके एक बड़ा ऐतिहासिक क़दम उठाया है। अब कश्मीर भी विकास के पथ पर अग्रसर होगा। हमारा स्वतंत्र भारत आज एक समृद्ध, धर्मनिरपेक्ष, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक व प्रगतिशील देश है।

साधना भार्गव

आज़ादी तो हमें 1947 में ही मिल गई थी। उस आज़ादी के तहत भारत तरक़्क़ी की राह पर चल पड़ा और सबसे बड़ा लोकतन्त्र बना। मोदी जी के नेतृत्व में धारा 370 को हटाने का जो ऐतिहासिक व साहसिक फ़ैसला हुआ वह हमारी आज़ादी को पूर्णता देने वाला क़दम है। हमारी माँ के माथे मुकुट सज गया है। एक सुन्दर व परिपूर्ण भारत की जो कल्पना हर भारतवासी करता है वह सपना अब साकार होने लगा है। हर क्षेत्र में तरक़्क़ी करती महिलायें, मुस्लिम बहनों को तीन तलाक़ से राहत - क्या ये प्रगति की ओर बढ़ते क़दम नहीं? हाँ खोया भी बहुत... नैतिक मूल्य व भाईचारा। पर जद्दोजहद जारी है... और विजय हमेशा सत्य व नैतिकता की होती है।

मिनी मेहरा

यह कथन बिल्कुल सत्य है , की जो आज हम अपने देश को एक आज़ाद देश कह पा रहे है तो वो केवल हमारे वीर स्वतंत्रता सेनानियों की वजह से , इन बीते वर्षों में हमने अपने आप को एक नई दिशा दी है, हमने प्रयत्न करा है कि हर क्षेत्र में भारत का नाम ऊंचा कर सके,चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो ,चाहे कृषि, टेलीकॉम, व्यापार आदि। हमने कोशिश करी की जिन्दगी की इस दौड़ में हम कभी ना हारे।

नम्रता पानीकर

भारत एक समग्र, सम्पूर्ण देश है। भारत के आज़ादी के 72 साल गवाह है कुछ सुनहरी यादों के कुछ काली रातों के। सबकुछ गंवाने के बाद एकजुट हो कर जिस तरह भारत उठ के खड़ा हुआ है वह निश्चित ही काबिले तारीफ़ है । देश में बदलाव की बयार तो बह रही है। आज विश्व पटल पर अपनी एक विशिष्ट छवि के साथ, विकास की दौड़ में आगे निकलने को आतुर है । आज 72 साल बाद कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जहां भारत ने अपना परचम ना लहराया हो चाहे वह विज्ञान, तकनीक, कृषि, साहित्य अथवा खेल हो सभी क्षेत्रों में भारत अग्रसर है। वहीं दूसरी ओर सामाजिक मूल्यों को भीषण क्षति पहुँच रही है। हम सामाजिक अनुशासन से निरन्तर उछृंखलता और उद्दंडता की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। अपने संस्कारों का परित्याग कर हम स्वयं को विकास की राह पर कितने दूर तक ले जाएंगे ये समय ही बताएगा।